

व्रणिल (wie oben) adj. wund: ein Baum SHADV. Br. 4, 4.

व्रणीय (wie oben) adj. am Ende eines comp.: द्वि° von den zweierlei Wunden (शारीर und घातचुक, den von selbst entstanden und durch fremde Gewalt zugefügten) handelnd, Suçr. 2, 1, 3, 8.

व्रण्य (wie oben) adj. für Wunden zuträglich Suçr. 1, 190, 3. 195, 18. 214, 20.

1. व्रतं (von 2. वृ) 1) n. (nach AK. 2, 7, 37 und Trix. 3, 5, 11 auch masc., welches wir nur durch M. 2, 3 zu belegen vermögen). am Ende eines adj. comp. f. घा. a) Wille, Gebot; Gesetz, vorgeschriebene Ordnung RV. 2, 8, 3. 38, 7. 9. 3, 56, 1. तस्य व्रतानि न मिनस्ति धीराः 7, 31, 11. 47, 3. देवानामति व्रतम् gegen den Willen der Götter 10, 33, 9. प्रचाकशद्वतानि देवः संवितामि रत्तते (oder zu d) 4, 53, 4. 5, 63, 7. 7, 83, 9. अर्धधानि वरुणस्य व्रतानि 4, 24, 10. अग्रच्युत 2, 28, 8. ध्रुव 5, 69, 4. व्रता ते अग्रे मरुतो मरुतानि 3, 6, 5. 7, 6, 2. तमर्यमाभि रत्तत्पञ्चमनु व्रतम् 1, 136, 5. 2, 38, 3. अनु व्रतं वरुणो यत्ति मित्रः 4, 13, 2. 3, 61, 1. व्रता देवानो मनुष्यधर्मभिः nach göttlicher Ordnung und menschlichen Satzungen 3, 60, 6. 5, 72, 2. — b) Botmässigkeit, Gehorsam; Dienst RV. 1, 31, 1. यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः 101, 3. 10, 36, 13. आर्षश्चिदस्य व्रतं या निर्मयाः 2, 38, 2. 5, 83, 5. 7, 5, 4. यस्ते शिर्षति व्रतेन gehorsam 3, 59, 2. आदित्यस्य व्रतमुपतिपत्तः 3, 54, 9. वयं सौम व्रते तव प्रजावत्तः सचेमाहि 10, 57, 5. AV. 4, 25, 3. यस्य व्रतं पशवो यत्ति सर्वे 7, 40, 1. मम वाचमेकव्रतो शुषस्व Āc. GRHJ. 1, 21, 7. — c) Gebiet: याः पार्थिवास्तो या अपामापि व्रते RV. 5, 46, 7. 3, 38, 6. गुरु 84, 5. 1, 163, 3. 10, 114, 2. व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु AV. 7, 68, 1. तस्य व्रतं रत्ततं विशे ज्ञानाय शर्म यच्छतम् RV. 1, 93, 8. — d) Ordnung so v. a. geordnete Reihe, Reich: त्रीणि व्रता विद्वे अतैरेषाम् RV. 2, 27, 8. ज्ञानयतो देव्यानि व्रतानि 7, 75, 3. आर्या व्रता विमृजतो अग्निर्त्तमि 10, 65, 11. द्यावापृथिवी ज्ञनयन्मि व्रतापु ओषधीः die Reiche (der Natur) 66, 9. शं नो अदितिर्वस्तु व्रतेभिः sammt den (verschiedenen) Reichen 7, 35, 9. hierher vielleicht auch यतो व्रतानि पश्यते 1, 22, 19. 4, 53, 4. — e) Beruf, Amt; gewohnte Thätigkeit, Thun, Treiben, Gewohnheit: नानां वा उ नो धियो वि व्रतानि ज्ञानानाम् RV. 9, 112, 1. विश्वस्य हि प्रेषितो रत्तसि व्रतम् beobachtest eines Jeden Thun 37, 5. विश्वेतानि वरुणस्य व्रतानि das alles ist Varuṇa's Amt 8, 42, 1. सूर्यस्य व्रतानि Weise —, Verhalten der Sonne TS. 4, 3, 11, 3. आदित्यस्य व्रतमनुपर्यावर्तते sie ahmen die Bewegung des Āditja (der Sonne) nach Ait. Br. 3, 11. अर्णवस्य व्रतार्मिनात् das Treiben der Fluth RV. 10, 111, 4. आ वञ्चितमा वो व्रतमा वो ऽहं समितिं ददे 166, 4. तन्वः, मनांसि, व्रता AV. 6, 74, 1. 64, 2. 2, 30, 2. 3, 8, 5. VS. 12, 58. नानामनसः खलु वै पशवो नानावृताः TS. 5, 3, 1, 3. अर्क° (v. l. आदित्य°) Spr. (II) 743. शशि° (I) 1717. मारुत 1869. यम° 2321. पार्थिव 2325. वारुणीर्त्ततेः 2751. व्रतं वारुणम् 2752. आलस्य कुमुदव्रतम् KATHAS. 72, 287. चकोर° 76, 11. पोथ° MBH. 8, 2557. साधुव्रते स्थितः 4, 81. निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रव्रतम् Spr. (II) 1737. सत्पुरुष° 3277 (pl.). (I) 2768. MBH. 7, 6988. KATHAS. 101, 37. सकृजं सतां व्रतम् 18, 188. शिशु° HARIV. 3438. अकापुरुष° Spr. (II) 398. विनयो हि सतीव्रतम् KATHAS. 17, 56. न मूढव्रतामार्ते Spr. 4778. समानव्रतभूत् dieselbe Lebensweise befolgend 4603. वैखानस ÇĀK. 26. तुल्यनाम° adj. BHĀG. P. 4, 24, 13. भय° adj. RAGH. 17, 42. अथ तु वेत्ति शुचि व्रतमात्मनः so v. a. wenn du ein reines Gewissen hast

ÇĀK. 123. शुचि° adj. (f. घा) M. 9, 70. R. 2, 77, 10. शुभ° adj. 1, 9, 9. — f) religiöse Pflicht, Gottesdienst; Pflicht überh.; = कर्म NAIKH. 2, 1. Nir. 2, 13. 12, 45. — RV. 1, 22, 6. कविर्देवानां परि भूषति व्रतम् 31, 2. 136, 5. 144, 1. ऋतस्य देवा अनु व्रता गुः 65, 3. 3, 7, 7. तव व्रताय मृतिभिर्ऋतामहे 2, 23, 6. अनु व्रतानि वर्तते कृष्णान् 1, 183, 3. तस्य व्रतानि वपुर्भूषेम् दम् आ सुवृत्तिभिः 3, 3, 9. व्रतैः सीततो अत्रतम् 6, 14, 3. 8, 92, 1. 9, 73, 3. यद्वै वयं प्रमिनाम् व्रतानि wenn wir unsere Pflichten gegen euch verabsäumen 10, 2, 4. 25, 3. AV. 7, 74, 4. MBH. 13, 127. पत्न्यौ भक्तिव्रतं स्त्रीणामहेको मन्त्रिणा व्रतम्। प्रजानुपालनान्यकर्मता भूतां व्रतम् Aufgabe Spr. 4493. अहं ते संप्रदास्यामि करं वैश्यव्रते स्थितः die Pflichten eines Vaicja erfüllend MĀRK. P. 116, 3. विष्णु° Pflichten gegen BHĀG. P. 8, 4, 7. तद्वत् adj. die Pflichten gegen sie (die Gattin) erfüllend M. 3, 45. पितृ° adj. BHAG. 9, 25. अतिथि° adj. MBH. 13, 2019. गृह° adj. so v. a. die Pflichten eines Haushalters erfüllend BHĀG. P. 7, 5, 30. — g) jede übernommene religiöse oder asketische Begehung oder Observanz: Regel, Gelübde, heiliges Werk (z. B. Fasten, Keuschheit) AK. 2, 7, 37. H. 843. HALĀJ. 5, 67. 74. व्रतं चरिष्यामि VS. 1, 5, 19, 30. व्रतं च अद्धा चोपैमि 20, 24. धर्मस्य AV. 4, 11, 6. अनुवृत्तः 11. 10, 7, 1. 11. 11, 7, 9. TBa. 1, 4, 4, 2. यः संवत्सरं व्रतं चरति 3, 8, 4. तिस्रो रात्रिर्व्रतं चरेत् er übe Enthaltensamkeit 2, 5, 1, 7. ÇAT. Br. 5, 7, 1. भृगुणा वा व्रतेनादधामि nach der Regel der Bhṛgu TBa. 1, 1, 4, 8. स हि नक्तं व्रतानि मृष्यते TS. 1, 5, 5, 5. नृपर्वणि नाम व्रतम् 6, 2, 5, 2. तस्यैतद्वत् नानृतं वदेन मांसमग्नीपात् für ihn gilt folgende Regel 2, 5, 5, 6. 5, 5, 4, 3. Ait. Br. 8, 28. ÇAT. Br. 1, 1, 4, 1. figg. अनशनमेव व्रतं मेने 7, 4, 6, 4, 2. 10, 3, 4, 2. 4. KĀTJ. Çr. 1, 10, 12. 4, 15, 4. अन्नं न निन्द्यात् तद्वत् TAITT. Up. 3, 7, 8. दीक्षित° Ait. Br. 7, 28. ÇĀNKH. Çr. 3, 8, 10. KĀTJ. Çr. 4, 6, 13. गृहमेधि° GOBH. 1, 4, 26. ĀPAST. 2, 1, 1. अर्धमास° GOBH. 4, 5, 21. विसर्जनं KAUC. 42. 68. विसर्जनीय ÇAT. Br. 5, 5, 2. विसर्ग PAÑĀV. Br. 2, 10. समापन KAUC. 42. व्रतादानीय 56. — M. 2, 165. व्रतोपवासपरा R. 2, 26, 28. Spr. 2925. BRAHMA-P. in LA. (III) 49, 14. न संतोषसमं व्रतम् Spr. (II) 3689. RAGH. 2, 4. व्रतानि पञ्च भिन्नानाम् MĀRK. P. 41, 16. पञ्चाशीति Verz. d. Oxf. H. 34, 6, 44. एकव्रत्तव्रताचाराः AK. 2, 7, 11. H. 80. व्रतात् in Folge eines Gelübdes 810. वशात् dass. AK. 2, 7, 43. व्रतं चरु M. 4, 198. fig. Spr. (II) 3836. BHĀG. P. 3, 1, 19. 4, 22, 12. पथावच्चरित° adj. MBH. 3, 2246. चरित° adj. R. 1, 3, 1. सुचरित° adj. M. 11, 116. चीर्ण° adj. BHĀG. P. 9, 10, 33. तच्चैनां चारयेद्वत् M. 11, 176. एतदेव व्रतं कुर्युः 117. 170. 181. मैमं वर्षसकृदस्य कृत्वा व्रतमनुत्तमम् R. 1, 65, 2. KATHAS. 13, 77. व्रतानीमानि धारयेत् M. 4, 13. BHĀG. P. 9, 2, 10. तेन सार्धं व्यधाद्वत् KATHAS. 13, 78. 21, 142. कथमात्तमिदं कष्टमीदृशेन त्वया व्रतम् 28, 20. 21, 142. व्रतादान H. 81. HALĀJ. 4, 91. व्रतं पक् KATHAS. 68, 91. पृच्छा PAÑĀT. 34, 9 (ed. ord. 30, 13). व्रतमाग्नि PRAB. 52, 9. अर्धवसा Hit. 19, 21. अनुष्ठा BHĀG. P. 8, 17, 1. समात VARĀH. BRH. S. 103, 7. व्रतं समापयेत् WEBER, KRSHNĀG. 308. fig. आ व्रतस्य समापनात् M. 5, 88. व्रतं पालयतः RAGH. 2, 25. पारय R. 2, 55, 19. MBH. 3, 16719. संपादन VIKR. 37, 7. व्रतमादिष् M. 4, 80. fig. R. 2, 52, 65. उद्दिष्ट MBH. 3, 16716. किनस्ति व्रतमात्मनः M. 2, 180. लोपन 11, 81. भङ्ग Verz. d. Oxf. H. 88, 26. 282, 5, 41. fig. चिह्न BHĀG. P. 6, 18, 57. अस्कान्दित° 1, 6, 32. शास्त° 3, 21, 87. फलित° KATHAS. 3, 23. नियत° 35, 26. यत° MBH. 1, 6936. संशित° 5102. M. 1, 104. R. 2, 54,